कासिम रजा

कॉलेज के अनुभवों से बना है मेरा व्यक्तित्व

ब्रिटनी के. एंडरसन

मई के आखिर में एक बेहद गर्म दिन जब मैं अमेरिकी दूतावास में 10 सप्ताह की इंटर्नशिप की शुरुआत के लिए नई दिल्ली पहुंची तो मेरे पास मल्टी-विटामिन और अमेरिका के सबसे प्रतिष्ठित एचबीसीयू (ऐतिहासिक रूप से अश्वेत कॉलेज या यूनिवर्सिटी) हॉवर्ड यूनिवर्सिटी की डिग्री के अलावा कोई खास साज-सामान नहीं था। अमेरिका के इतिहास में ऐतिहासिक रूप से अश्वेत कॉलेज या यूनिवर्सिटी की एक खास जगह है- इनमें से कुछ तो देश के सबसे पुराने विश्वविद्यालय हैं। अफ्रीकी अमेरिकियों पर गुलामी लादने के जमाने में शैक्षिक उपेक्षा के शिकार ये विश्वविद्यालय आगे बढ़े हैं। अफ्रीकी अमेरिकी समाज के अग्रणियों, श्वेत दासता विरोधियों और धार्मिक संस्थानों द्वारा अश्वेतों के लिए उच्च शिक्षा संस्थान खोलने की शुरुआत करने से पहले अश्वेतों के लिए कोई उच्च शिक्षा संस्थान नहीं था। ऐसा सबसे पुराना संस्थान 1837 में स्थापित पेंसिल्वेनिया की शेनी यूनिवर्सिटी है। 1964 में श्वेतों या अश्वेतों के लिए पृथक-पृथक उच्च शिक्षा संस्थानों को गैरकानूनी घोषित कर दिया गया (वैसे ऐतिहासिक रूप से अश्वेत कॉलेज या यूनिवर्सिटी सदा से सभी नस्लों के छात्रों के लिए खुले रहे हैं)। आज अमेरिका में 107 मान्यता प्राप्त और ऐतिहासिक रूप से अश्वेत कॉलेज या विश्वविद्यालय हैं और उनमें करीब 228,000 छात्र शिक्षा पा रहे हैं।

मैंने हॉवर्ड का चुनाव उन दो अन्य संस्थानों को देखने के बाद किया जहां मुझे दाखिले के लिए स्वीकार कर लिया गया था- इलिनॉय की स्टेट यूनिवर्सिटी के समाजशास्त्र विभाग की बहुत ख्याति है और अटलांटा, जॉर्जिया स्थित स्पेलमैन कॉलेज ऐसा एचबीसीयू संस्थान है जो केवल महिलाओं के लिए है। मैं यूनिवर्सिटी ऑफ़ इलिनॉय के खास रंगों वाले कपड़े पहनने लगी थी और सबको बताती थी कि मैं वहीं दाखिला लूंगी। स्पेलमैन का परिसर देखने तो मैं यूं ही चली गई थी। इस धूप भरे परिसर में मैं अमेरिका की अग्रणी समकालीन लेखिका एलिस वॉकर, चिल्ड्रन डिफेंस फंड की संस्थापक और अध्यक्ष मेरियन राइट एडेलमैन और अमेरिकी वायुसेना की पहली महिला ब्रिगेडियर जनरल मार्सेलाइट जे. हैरिस जैसी प्रख्यात पूर्व छात्राओं की विरासत को पग-पग पर महसूस कर रही थी।

एक निम्न आय वर्ग परिवार की कॉलेज जाने वाली पहली बेटी मैं अपना उज्जवल, सफल भविष्य देख पा रही थी। मैं जानती थी कि मुझे किसी ऐतिहासिक रूप से अश्वेत कॉलेज या यूनिवर्सिटी में ही दाखिला लेना होगा। लेकिन हुआ यह कि स्पेलमैन में मुझे खास आर्थिक सहायता का आश्वासन नहीं मिला जबकि हॉवर्ड यूनिवर्सिटी में पूरी छात्रवृत्ति मिल रही थी। बस मैंने बोरियाबिस्तर बांधा और सीधी वाशिंगटन, डी.सी. चली आई। मैं ईस्ट कोस्ट के इलाके में कभी नहीं आई थी और बस इसी बात से खुश थी कि मुझे पढ़ने का अवसर मिल रहा है। तब मैं कहां जानती थी कि अनजाने में ही मैंने शायद जीवन का सबसे अच्छा निर्णय लिया है।

हॉवर्ड में अध्ययन के एक प्रमुख क्षेत्र के अलावा छात्रों को अफ्रीकी अध्ययन से जुड़ा एक कोर्स भी चुनना होता है। इसमें अमेरिका में अश्वेत लोगों के मुद्दों, सिद्धांतों और विकास प्रक्रिया से जुड़े पाठ्यक्रम शामिल होते हैं। खुद मैंने अश्वेतों के विकास से जुड़े अश्वेत देह, वेशभूषा और संस्कृति, विजुएल संस्कृति में अश्वेत महिलाओं और अफ्रीकी आप्रवासी जैसे विषयों में से चुनाव किया। इसके अलावा अश्वेत मुद्दों को इतिहास से लेकर भौतिकी और फैशन सामग्रियों की बिक्री तक जैसे विषयों से जोड़कर पढ़ाया जाता है। अध्यापक किसी भी क्षेत्र में अश्वेतों के योगदान और अश्वेतों के जीवन से इनके सम्बन्ध को स्पष्ट करते हैं। हॉवर्ड की इमारतें अश्वेत नेताओं की स्मृति से जुड़ी हैं- मेरी मैक्लायड बेथ्यून एनेक्सी, इरा एल्ड्रिज थियेटर, फ्रेडरिक डगलस मेमोरियल लेक्चर हॉल। यहां छात्रों से एक गहरी इतिहास चेतना विकसित करने की अपेक्षा रखी जाती है ताकि भविष्य का नेतृत्व तैयार हो सके।

मेरे प्रोफ़ेसरों से महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं के बारे में वैयक्तिक झुकाव के बजाय दिलचस्पी और गौरव के साथ पढ़ाने की उम्मीद की जाती थी- अश्वेत लोगों का ज़िक्र करते हुए वे अक्सर कहते 'हम'। लेकिन इससे एक कटा-कटा सा, अलग-थलग किस्म का भाव नहीं उभरता था क्योंकि हॉवर्ड यूनिवर्सिटी में शिक्षा का उद्देश्य है छात्रों में मानवता का सम्मान और तमाम तरह के दमन के विरुद्ध खड़े होने की भावना जगाना। विडम्बना ही है कि हॉवर्ड की आलोचना करते हुए अक्सर कहा जाता है कि यहां एक ही समुदाय के छात्रों का बोलबाला है, सच यह है कि यहां अंतरराष्ट्रीय छात्रों की संख्या अन्य अमेरिकी विश्वविद्यालयों की तुलना में काफी अधिक है। यहां कोटा का नामनिशान नहीं है और दाखिले की प्रक्रिया में नस्ल, राष्ट्रीयता आदि के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाता। यहां मेरे मित्रों में भारत, ब्राज़ील, जापान, कैमरून, फ्रांस और कई अन्य देशों के छात्र शामिल थे।

भारत से हॉवर्ड यूनिवर्सिटी का सम्बन्ध बहुत पुराना है। 1930 के दशक के मध्य में हॉवर्ड यूनिवर्सिटी के रैंकिन चैपल के डीन हॉवर्ड थरमैन और उनकी पत्नी स्यू बेली थरमैन ने भारत यात्रा के दौरान गांधीजी से स्वतंत्रता के भारतीयों के संघर्ष और नागरिक अधिकारों के लिए अश्वेत अमेरिकियों के संघर्ष के बारे में चर्चा की थी। 1947 में हॉवर्ड यूनिवर्सिटी के अध्यक्ष मॉर्डेकाई व्याट जॉनसन और एक और प्रमुख ऐतिहासिक रूप से अश्वेत संस्थान अटलांटा के मोरहाउस कॉलेज के अध्यक्ष बेंजामिन मेज़ के नेतृत्व में एक अश्वेत शिष्टमंडल भारत आया था। अमेरिका लौटकर मॉर्डेकाई व्याट जॉनसन ने फिलाडेल्फिया, पेंसिल्वानिया में प्रबुद्ध वर्ग को सम्बोधित करते हुए भारत के अपने अनुभव के बारे में बताया। श्रोताओं में हाल ही में मोरहाउस कॉलेज से पढ़कर निकले युवा मार्टिन लूथर किंग जूनियर भी थे जो गांधीजी की सर्व धर्म समभाव और अहिंसा की नीतियों से बहुत प्रभावित हुए। किंग ने गांधीजी पर शोध शुरू किया और करीब एक दशक बाद खुद भी भारत की यात्रा पर आए। उन्होंने सविनय अवज्ञा और सर्व धर्म समभाव की नीति का इस्तेमाल 50 और 60 के दशकों के अमेरिकी नागरिक अधिकार आंदोलन के लिए रणनीति रचने में किया।

आज हॉवर्ड यूनिवर्सिटी की विशेषता उसके जानेमाने भारतीय शिक्षक हैं। इनमें डॉ. अनिता नाहल आर्य भी शामिल हैं जिनका कार्य भारतीय और अफ्रीकी अमेरिकी महिलाओं के बीच सम्बन्धों को मज़बूत बना रहा है। इस विश्वविद्यालय ने आपसी समझदारी बढ़ाने के लिए हॉवर्ड यूनिवर्सिटी-जादवपुर यूनिवर्सिटी शोध पहल और अमेरिका-भारत अध्ययन पहल जैसे कार्यक्रम भी विकसित किए हैं। अपने यहां निरन्तर बढ़ती भारतीय और आप्रवासी भारतीय छात्रों की संख्या के माध्यम से हॉवर्ड यूनिवर्सिटी और अन्य ऐतिहासिक रूप से अश्वेत संस्थान आज के वैश्विक समाज में अपनी भूमिका को मज़बूत बना रहे हैं।

ब्रिटनी के. एंडरसन ने यह लेख अमेरिकन सेंटर, नई दिल्ली में पब्लिक अफ़ेयर्स इंटर्न के रूप में कार्य करते हुए लिखा।

इस लेख के बारे में अपने विचार editorspan@state.gov पर भेजिए।

अमेरिकन लाइब्रेरी में उपलब्ध पुस्तकें :

द हॉवर्ड गाइड टु अफ्रिकन-अमेरिकन हिस्ट्री (नई दिल्ली)
हॉवर्ड यूनिवर्सिटी: एन आर्किटेक्चरल टूर (कोलकाता)
मार्टिन लूथर किंग, जूनियर: द मेकिंग ऑफ़ ए माइंड (नई दिल्ली, कोलकाता, चेन्नई)

ज़्यादा सूचना के लिए

हॉवर्ड यूनिवर्सिटी की वेबसाइट http://www.howard.edu

ऐतिहासिक रूप से अश्वेत कॉलेज एवं विश्वविद्यालयों से संबद्ध वेबसाइट http://www.ed.gov/about/offices/list/ocr/docs/hq9511.html

हिंदुस्तान टाइम्स / एस. सुब्रमनियन

बाएं: 3 नवंबर 2005 को हॉवर्ड विश्वविद्यालय (दाएं) में पहली बार दीपावली समारोह आयोजित करने के मौके पर हॉवर्ड से नृत्य को विशेष विषय लेकर पढ़ रहे छात्रों ने भांगड़ा प्रस्तुत किया।

फोटो: आदि नेकपायी

अश्वेत बहुल संस्थान

ऐतिहासिक रूप से अश्वेत कॉलेज या यूनिवर्सिटी यानी एचबीसीयू केवल अश्वेत छात्रों के बहुमत वाले कॉलेज या विश्वविद्यालय नहीं है। अश्वेत छात्रों के बहुमत वाले कॉलेज या विश्वविद्यालयों को अश्वेत बहुल संस्थान या पीबीआई कहा जाता है। अपनी स्थिति और अन्य कारकों के कारण ये संस्थान प्रमुखत: अफ्रीकी-अमेरिकी छात्रों को आकर्षित करते रहे हैं। अमेरिका के 75 कॉलेज, विश्वविद्यालय और व्यवसायिक शिक्षण संस्थान पीबीआई के रूप में जाने जाते हैं। यहां पढ़ रहे लगभग 265,000 छात्र या तो निम्न आयवर्ग से हैं या अपने परिवारों की कॉलेज जाने वाली पहली पीढ़ी है। यानी एचबीसीयू तो पीबीआई होते हैं लेकिन पीबीआई संस्थान हमेशा एचबीसीयू नहीं होते।